THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

बच्चों – जैसा विश्वास
Childlike trust

Author – Katie Martin

Christian Science Sentinel Volume 115, Issue 34, August 26, 2013

मेरा परिवार छोटे शहर नए इंग्लैंड के तट से दूर एक टापू पर रहता है। जब आप सूर्यास्त के समय नगर से वापस टापू की ओर वाहन पर आते हो, डूबता सूरज पश्चिम दिशा के सामने के घरों की खिड़कियों पर चमकता है। "अग्नि खिड़कियाँ" कहलाए जाने वाली यह खिड़कियाँ दूर से ऐसा प्रतीत करवाती हैं जैसे कि घरों के अंदर दहकती आग लगी हुई हो – धुँए के बिना। यह जादुई तरीके से सुंदर ही लगता है, और क्योंकि स्थानीय लोगों में से कोई भी इस दृश्य से मूर्ख नहीं बनता, इसलिए हम किसी की भी सुरक्षा के डर के बिना नज़ारों का आनंद लेते हैं।

ऐसे बहुत सारे भ्रम हैं जो कि नश्वर इन्द्रि की प्रवृत्ति और उसके छल को समझने में हमारी सहायता करते हैं। उस कारण भ्रमों को पहचानना मुझे पसंद है। फिर भी, मैं स्वयं को हताश भी पाती हूँ उन समस्याओं पर जो कि वास्तविकताओं की तरह नज़र आती हैं, और हैरान होती हूँ कि मैं उनके बारे में वही भ्रमिक प्रवृत्ति का दावा क्यों नहीं कर पाती हूँ। उन पर विश्वास न करना इतना कठिन क्यों लगता है? नश्वर इन्द्रियाँ जो प्रदर्शित कर रही हैं उनकी अवास्तविकता को स्वीकार करना, और आगे बढ़ जाना इतना कठिन क्यों होता है?

नश्वर मन (जिसे बाइबल में "भौतिक मन" कहते हैं जो कि हमारी ओर से बात करने की कोशिश करता है; देखो रोमियो 8:7) इस तरह धोखेबाज़ होता है – हमें यकीन दिलाने की कोशिश करते हुए कि नश्वर भ्रम होते हैं और फिर नश्वर वास्तविकताएँ भी होती हैं। संभवत: हमें समझने की जरूरत है कि वह सब जो नश्वर इन्द्रियाँ चित्रित करती हैं भ्रम है, केवल वह सब चीज़ें ही नहीं जिन्हें भ्रम कहते हैं। यह आध्यात्मिक समझ है, केवल दिव्य आत्मा, परमेश्वर की सर्वश्रेष्ठता पर आधारित, जो कि हमें हमारी ज़िंदगियों और हमारी जीविका के बारे में सही जानकारी देती है।

इस समझ को वास्तव में प्राप्त करने के लिए हमें मूल बातों पर वापिस जाने की ज़रूरत है, बच्चों जैसी मासूमियत को हमारे दिलों पर राज करने देने की। मेरी बेकर ऐडी इसके बारे में साँयस एण्ड हैल्थ विद् की टू दॅ स्क्रिपचर्स में लिखती हैं, जहाँ पर वह कहती हैं, "एक छोटे बच्चे की तरह बनने और नए के लिए पुराने को छोड़ देने की तत्परता, सोच को उन्नत विचार के लिए ग्रहणशील बनाती है। झूठे सीमा – चिन्हों को छोड़ने की प्रसन्नता और उन्हें लुप्त होते हुए देखने की खुशी, – यह मनोवृत्ति परम समन्वय को शीघ्र लाने में सहायता करती है" (पृष्ठ 323 – 324)।

---

* जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।

For this translation in English and other translations in [Hindi], please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2014 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

एक छोटा उदाहरण देती हूँ यह बताने के लिए कि वह कार्य कर सकता है। सालों पहले जब हमारा बेटा कोडी लगभग पाँच साल का था, मैंने उसे एक दोस्त के घर से लिया। वे बाहर मिट्टी और धूल में खेल रहे थे और अच्छा समय बिता रहे थे। लेकिन, जैसे ही वह गाड़ी में बैठा, मैंने ध्यान दिया कि एक आँख बहुत लाल थी ओर सूज गई थी। मुझे कोडी की आँख की तरफ ध्यान से देखना याद है। मुझे लगता है हमने शायद उसे धोया भी था। उस में कुछ भी नज़र नहीं आ रहा था, न ही वह छूत के लक्षण प्रतीत हो रहे थे। कोडी ने मुझे बताया कि उसकी आँख उसे तंग कर रही थी और वह अपने कराटे अभ्यास की बजाए घर जाना चाहता था। मैंने उसकी चिंता पर ध्यान दिया और सुझाव दिया कि हम उसके कराटे अभ्यास जाने की कोशिश करेंगे ताकि हम इसके लिए प्रार्थना कर सके, परमेश्वर से उन उपचारक संदेशों को पाने के लिए जिनकी हमें ज़रूरत है। वह मान गया। लेकिन, अपने अभ्यास के बीच में ही उसने छुट्टी मांगी क्योंकि उसकी आँख ज़्यादा खराब होती दिखाई दे रही थी। हम चले गए और मैंने प्रार्थना करनी जारी रखी, परन्तु मैं इस एहसास से उभर नहीं पा रही थी कि मैं जिसे एक ठोस समस्या समझ रही थी उसे संभालने के लिए केवल मैं ही व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदार थी। मैंने तनाव महसूस किया। निःसंदेह, मैं एक सहायक, उपचारक माँ बनाना चाहती थी, परन्तु क्या यह सब इस बारे में था कि मैं क्या करने मे सक्षम थी? कहने की ज़रूरत नहीं है, मेरी प्रार्थनाएँ इस समय उतनी प्रभावशाली नहीं थीं।

कराटे से घर आते हुए, हमें एक भव्य सूर्यास्त का उपहार मिला, और बहुत सारी "अग्नि खिड़कियाँ" हमारे सामने थीं जब हम टापू की ओर वापिस जा रहे थे। हमारा बेटा इस भ्रम से परिचित था। इसके बारे में ज़्यादा सोचे बिना, मैंने कहा, " बेटा, कोडी, मैं उम्मीद करती हूँ कि उन घरों में सभी लोग ठीक हैं।" हम इस पर हँसे और फिर मैंने उसे बताया कि कई बार भ्रम बहुत वास्तविक दिख सकते हैं और महसूस हो सकते हैं–बिल्कुल उसकी आँख में घाव की तरह। वस्तुतः मेरे समझने से बहुत देर पहले वह समझ गया था, क्योंकि जब तक हम घर पहुँचे, उसकी आँख लगभग पूरी तरह से वापिस सामान्य हो गई थी, और एक घण्टे के अन्दर वहाँ कोई घाव या लाली नहीं थी। हमारे बेटे ने अभी–अभी सत्य स्वीकार किया था कि एक भ्रम क्या होता है–कुछ नहीं! दूसरी ओर, मैं इस सोच पर अटकी हुई थी कि मुझे किसी ऐसी चीज़ को संभालना था जो कि वास्तविक थी और फिर उसे अवास्तविक बनाने की कोशिश करनी थी।

हम उपचारों को कमा नहीं रहे हैं; हम परमेश्वर की उपचारक शक्ति के साक्षी बन रहे हैं।

मेरे बेटे ने भ्रम का विश्वास नहीं किया। नए के लिए पुराने को छोड़ने में उसे कोई कठिनाई नहीं थी। निःसंदेह, यह देखना सरल है कि छोटे बच्चे स्वाभाविक तौर पर मासूम, भरोसा करने वाले और सिखाने–योग्य होते हैं। इसी कारण जीसस उन्हें इतना प्रेम करते थे, और हम सब को बताया, "जब तक तुम परिवर्तित नहीं होते, और एक छोटे बच्चे की तरह नहीं बन जाते, तुम स्वर्ग के साम्राज्य में प्रवेश नहीं कर सकते" (मत्ती 18:3)। परन्तु, सच्चाई यह है कि जीसस ने हमें छोटे बच्चों की तरह बनने के लिए इसलिए कहा क्योंकि हम में ऐसा करने की क्षमता है। और यह एक विषम प्रक्रिया नहीं है। जैसे कि ऐडी ने लिखा, यह हमारी तत्परता हे जो सोच को ग्रहणशील बनाती है।

मेरे जीवन में ऐसे कई समय थे जब मैं बहुत इच्छुक थी एक समस्या को परमेश्वर पर छोड़ देने के लिए और उसे जाने देने के लिए, कि उसका समाधान बहुत ही जल्दी और सहज रूप से आया। कई बार, मैंने इस पर परिश्रम किया कि कैसे एक उपचार लाया जाए यह सोचते हुए कि मैं किस तरह से बेहतर प्रार्थना कर सकती हूँ, ज़्यादा धार्मिकतापूर्वक जी सकती हूँ, बेहतर व्यवहार कर सकती हूँ, ज्यादा स्पष्ट रूप से सोच सकती हूँ, इत्यादि। ऐसा नहीं है कि वह सब करने में कुछ गलत है, जब तक कि हम यह सोचने में न अटक जाएँ कि उपचार करने की शक्ति हमें इसे आधार पर दे दी जाएगी कि हमने उन कार्यों को कितने

Translation © 2014 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

अच्छे से पूरा किया। हम उपचारों को कमा नहीं रहे हैं; हम परमेश्वर की उपचारक शक्ति के साक्षी बन रहे हैं। यहाँ पर एक बड़ा अंतर है। एक रास्ता अहंकारी है और दूसरा विनम्र, बच्चों–जैसा।

मैं अपने सन्डे स्कूल के विद्यार्थियों से अभिनय करने के लिए कहती थी कि एक समस्या को वे जीसस के कदमों पर रख दें, उसी तरह जैसे बाईबल में लोग करते थे। फिर मैं उनसे कहती थी यह उन्हें उनकी कमर और घुटनों को मोड़े बिना करना हैं (और वे उसे बुरी तरह भी फेंक नहीं सकते थे!) स्पष्ट रूप से यह हो नहीं सकता–चाहे उन्होंने कोशिश भी की। इस अभ्यास में यह संदेश है कि जीसस के कदमों पर समस्या को रखने के लिए विनम्रता की आवश्यकता होती है, या दूसरे शब्दों में, क्राइस्ट को उपचार कार्य करने देने के लिए। यह करना सुनने में आसान लगता है, परन्तु हम सब जानते हैं कि यह हमेशा उतना आसान महसूस नहीं होता। नश्वर मन हमें शक्ति की एक व्यक्तिगत समझ पर, या प्रयाप्त परिश्रम पर भी इतना केंद्रित रखने की कोशिश करेगा, कि एक समस्या को जाने देना और क्राइस्ट के ''कदमों पर रखना'' लगभग बहुत ज़्यादा आसान प्रतीत होगा, या एकदम अवास्तविक।

बच्चे स्वाभाविक रूप से अपने माता–पिता की ओर मार्गदर्शन, सांत्वना, सुरक्षा और प्रेम के लिए मुड़ जाते है। छोटे बच्चे इसे सबसे अधिक स्वाभाविक रूप से करते हैं। एक छोटे बच्चे की मासूमियत और विश्वास को पाने के लिए वापिस जाना शायद एक असंभावना लगे, परन्तु हम पर कभी भी ऐसी कोई मांगें नहीं रखी गई जिन्हें हम पूरी नहीं कर सकते क्योंकि हमने अपनी मासूमियत और विश्वास को–अपने बच्चों जैसा होने–को कभी नहीं खोया। अंदर का बच्चा केवल परमेश्वर–जैसी प्रवृत्ति की अभिव्यक्ति है–शुद्ध, अच्छा, हर्षित, मासूम, और मुक्त। यह हमारी आध्यात्मिक पहचान का हिस्सा है, और हम हमेशा इसकी उपस्थिति पर भरोसा कर सकते हैं।

Translation © 2014 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.